Post Graduate Programme

M.A. (Maithili)

Semester-II

Paper: CC-7 Paper code: MTL 523 Topic: अलंकार (Unit-IV)

'अर्थान्तरन्यास' अलंकारक सोदाहरण परिभाषा

परिभाषा - जतए साधर्म्य अथवा वैधर्म्यक द्वारा सामान्यसँ विशेषक वा विशेषसँ सामान्यक समर्थन करल जाए, ओतए अर्थान्तरन्यास अलंकार होइछ।

यथा - "अमृते भीजल चन्द्रक कर सितलल तनिक तनुदाहे।
धाताक विमुख रहने ध्रुव भीको करइए अधलाहे॥"
- 'एकावली परिणय'

एतए प्रथम पंक्तिमे एकावलीक विरह-स्थितिक वर्णन कए 'विशेष' कथन भेल अछि एवं दोसर पंक्तिमे 'सामान्य'क वर्णन कए प्रथम पंक्तिक 'विशेष'क समर्थन करल गेल अछि।

अथवा

"उनत ओरोज चिर अधाबए पुन-पुन दरसाए।
जइयो जतने गोआए चाहए हिमगिरि न नुकाए॥"
- विद्यापति

एतए सामान्य अर्थ अछि जे उन्नत ओरोजकेँ त्रौं वस्त्रसँ झँपैत तँ छइ, मुदा ओ पुनः-पुन देखार भए जाइत छइ। एहि 'सामान्य'क समर्थन दोसर पंक्ति 'विशेष'सँ करल गेल अछि - ओना तँ त्रौं यत्नपूर्वक ओकरा (स्तनकेँ) नुकबए चाहैत छइ, मुदा जेना कोनो प्रकारेँ हिमालय (पर्वत) केँ नुकाएल नहि जा सकैछ तहिना ओ अर्थात् हिमालय (पर्वत)-सदृश पुष्ट स्तन

नुकाइत नहि छल।

" सनातरि दुष्ट (अथवा) स्वभाव उरह पिक
अनकर नीक न देखए।
काननमे चिनु द्रोह काक पर
पच्छी सुत ओरि देखए।"

उपर्युक्त पदमे सेहो पूर्वार्द्ध सामान्यकेर उत्तरार्द्ध विशेष द्वारा समर्थन भेलाक कारणेँ अर्थान्तरन्यास अलंकार भेल।

1. " सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा।"
- सूत्र संख्या - 109, दशमोल्लास, 'काव्यप्रकाश'।

2. बदरीनाथ झा

- प्रोफेसर (डॉ.) वीरेन्द्र झा
मैथिली विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना - 5.